ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-2* May- 2021
Anthology : The Research

ललित कला एवं सौंदर्य शास्त्र
Fine Arts & Aesthetics

Paper Submission: 04/05/2021, Date of Acceptance: 14/05/2021, Date of Publication: 23/05/2021

निधि श्रीवास्तव
अतिथि प्रवक्ता,
संगीत विभाग, तबला
सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

ललित कलाओं में संगीत कला श्रेष्ठ कला है क्योंकि इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक तथा विस्तृत हैं। संगीत सर्वप्रथम अपनी कलात्मक साधना का परिचय देता है। इसमें चौसठ कलाएँ आती है। जिनमें से हमारे जीवन में संगीत चित्रकला, काव्यकला, इत्यादि का विशेष महत्व है।

Music art is the best art among fine arts because its field is very wide and wide. Music first introduces its artistic practice. There are sixty-four arts in it. Out of which music, painting, poetry, etc. have special importance in our life.

मुख्य शब्द : संगीत, चित्रकला, काव्यकला, मूर्तिकला, सौंदर्य शास्त्र, दर्शन, मनोविज्ञान, ऐस्थेटिक्स, ऐन्द्रिय बोध
Music, Painting, Poetry, Sculpture, Aesthetics, Philosophy, Psychology, Aesthetics, Sense.

उद्देश्य

समस्त ललित कलाओं जैसे–चित्रकला, काव्यकला, मूर्तिकला स्थापत्य कला एवं संगीत कला इत्यादि में सौन्दर्य निहित होता है। सौन्दर्य मानव मन में अपने आप ही उत्पन्न होता है। उसको किसी नियम में बांध कर के न तो रखा जा सकता है और न ही उत्पन्त किया जा सकता है। जैसा कि सर्वविदित है कि सौन्दर्य शास्त्र का अर्थ आत्म अनुभूति है और ये अभिव्यक्ति इन्ही ललित द्वारा व्यक्त की जा सकती है। वैसे तो सौन्दर्य सम्पूर्ण प्रकृति में व्याप्त है बस उसे अनुभव करने की आवश्यकता है।

मेरा मुख्य उदृेश्य प्रकृति तथा विभिन्न ललित कलाओं में व्याप्त सौन्दर्य का बोध अपने लेख द्वारा इस विषय में रूचि रखने वाले तथा विद्यार्थियों को करा सकूं। निसंदेह मेरा प्रयास और उदृेश्य ये भी है, मैंने अपने लेख द्वारा इस विषय सम्बन्धित ज्ञान को बॉट सकूं। यदि मेरे इस प्रयास से किसी भी व्यक्ति या विद्यार्थी को किंचित मात्र भी ज्ञान प्राप्त हो सका तो मैं अपने आप को धन्य समझूंगी।

प्रस्तावना

ललित कलाओं में संगीत कला श्रेष्ठ कला है क्योंकि इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक तथा विस्तृत हैं। संगीत सर्वप्रथम अपनी कलात्मक साधना का परिचय देता है।

मानव सभ्यता के साथ–साथ ही विभिन्न कलाओं का विकास हुआ। इस ललित कलाओं का लक्ष्य मनुष्य को भौतिक सुख–दुख से ऊपर उठाकर आलौकिक आनन्द और प्रेरणा प्रदान करना है। ललित कला के लिये आवश्यक है कि उसमें सौन्दर्य, माधुर्य, सहजता, सरलता, प्रवाह तथा ओज हो। लयात्मकता लालित्य का प्रमुख गुण है। संगीत, काव्य और चित्र–कला में ये सभी गुण पाये जाते है। सभी कलाएँ मन को शांति, आनन्द और प्रेरणा प्रदान करती हैं। संगीत कला में एक विशेष गुण और भी है कि वह मनुष्य के अतिरिक्त पशु ,पक्षियों को भी आकर्षित करती है। अन्य ललित कलाओं में यह सामर्थ्य नहीं होती।

काव्य, चित्र, वस्तु कला एवं शिल्प कला, बुद्धि के संयोग से ही भावों का उत्कर्ष कराने में सफल होती है।

वास्तव में देखा जाए तो चित्र, काव्य और संगीत, तीनों ललित कलाएँ एक दूसरे से अलग होते हुए भी, आपस में इस प्रकार जुड़ी हुई हैं– जैसे– कपड़ा और सूत संगीतकार धुन बनाते समय किसी चित्र की कल्पना करता हैं, कवि अपने काव्य की रचना करते समय अमूर्त स्वरों के छंद का वाहन बनाता है। चित्रकार या शिल्पकार शब्द के आश्रय से विषयवस्तु को अपने मस्तिष्क में कोई आकार देता है। और तब उसे मूर्त रुप प्रदान करता है। कवि किसी चित्र

की कल्पना करके काव्य का सृजन करता है। और चित्रकार काव्य सुनकर या किन्हीं स्वर–लहरियों में खो कर अपनी कृति का निर्माण करता है।

अतः हम कह सकते है कि ये सभी कलाऐं एक दूसरे से जुड़ी हुई है, और मानव को अपनी ओर आकर्षित करती रहती है।

सौन्दर्यशास्त्र मानव की कला चेतना और तत्तसम्बंधि आन्नदानुभूति का विवेचना एवं विश्लेषण प्रस्तुत करता है। आदिम काल से मुनष्य नें कलाकृतियों, मूर्तियो आदि के द्रारा अपनी कला के प्रति अभिरूचि को दर्शाया है। परन्तु पश्चिम में सौदर्यशास्त्र के चिन्तन का आरम्भ वामगार्टन से माना गया है।

18वी शताब्दी मे एलेकजेंडर वामगार्टन (1714–1762) ने पहली बार एस्थेटिक्स शब्द का प्रयोग किया ग्रीक धातु से संवेदन शब्द उत्पत्ति मानी जाती है। समय के साथ सौदर्यशास्त्र शब्द का अर्थ बदला और स्वयं वामगार्टन ने उसे सौन्दर्य विज्ञान कहॉ। कांट ने भी अपने ग्रन्थ (The Critical Judgment) में सुन्दर को सौन्दर्य अनुभूति के रूप में लिया।

19वी शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षो मे सौन्दर्य शास्त्र के विषय को चिन्तन और मनन् का विषय बनाया गया।

सौन्दर्यशास्त्र का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है. इसे न ही केवल दर्शन या मनोविज्ञान के अंग के रूप में ही स्वीकार किया जा सकता है बल्कि इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। एक अन्य मतो के अनुसार सौन्दर्यशास्त्र रसानुभूति से प्राप्त आनन्द का दार्शनिक विवेचन भी है। वोंसा जी के अनुसार सौन्दर्यशास्त्र ललित कलाओ के माध्यम से व्यक्त सौन्दर्य से मानते है। उनका कहना है कि प्राकृतिक सौन्दर्य और कलात्मक सैन्दर्य दोनो ही मानव कल्पना और इन्द्रिय बोध पर निर्भर है। वोसां के अनुसार सौन्दर्यशास्त्र सुन्दर का दर्शन है। हीगंल सौन्दर्यशास्त्र को ललित कलाओ के दर्शन के रूप मे स्वीकार करते है। उनका मानना है कि ई"वर ही एक मात्र पूर्ण तत्व है, जो सत्य, सुन्दर और शिव है।

परम्परानुसार सौदर्यशास्त्र को दर्शन शास्त्र की भाषा माना गया है। और यह सौन्दर्यशास्त्र मानव की कला चेतना और तत्सबंधी आनंदानुभूति का विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत करता है, आदिम काल से मनुष्य ने कला कृतियों, मूर्तियां आदि के द्रारा अपनी कला के प्रति अभिरूचि को दर्शाया है, परन्तु पि"चम में सौन्दर्यशाश्त्र के चिंतन का आरम्भ वामगर्टन से माना गया है। उसके भी पहले से सौनदर्यशास्त्र दर्शन की एक शाखा के रूप में मानव के जीवन और कला सम्बंधी मुल्यांकन मे सहायक होता रहा है।

सौन्दर्य को लेकर अनेक मनोवैज्ञानिक, मनोविश्लेषणात्मक एवं भाषिक व्याख्यॉए प्रस्तुत की गई हैं। प्लेटों और सेंट अगस्टाइन प्रचीन और मध्ययुगीन सौनदर्य चिंतन के प्रतिनिधि है तो हूम, कांट, हीगेल, शोपोनहार, क्रोचे आदि आधुनिक कला विवेचना प्लेटों के संवादों मे संगीत, काव्य, चित्र कला तथा स्थापत्य पर विचार मिलते है।

इसी की अभिव्यक्ति प्रकृति और मानव द्रारा सृजित कलाकृतियों में होती है। मेक्स डेजायर नें बीसवी शताब्दी के आरंभ मे सौन्दर्यशास्त्र और कला के 'सामान्य विज्ञान' नाम से समस्त वर्गो का सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया। आज सौन्दर्यशास्त्र का क्षेत्र बहुत व्यापक है।

आधुनिक विचारकों में लेंगर ने सौन्दर्यशास्त्र के सम्बंध में महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किये है। उनका मत है कि सौन्दर्यशास्त्र ललित कलाओं के दार्शनिक विकल्पों और समस्याओं का सैध्दान्तिक निरूपण है।

सौन्दर्यशास्त्र को सुनिश्चित एवं सर्वमान्य परिभाषा देना कठिन बात है। प्राचीन चिन्तकों ने सुन्दर की व्याख्या करते हुए लय, समानुपता आंगिक संतुलन पर विचार किया है, आधुनिक विचारक सौन्दर्य में महत्ता प्रभावशीलता, जीवन की परिपूर्ण सार्थकता की अवधारणा करते है।

भारतवर्ष में सौन्दर्य तत्व मीमांसा –ग्वेद से आरम्भ हुई और सौन्दर्य चितंन एक समृध् और पुरानी परम्परा रही, जिसके अन्तर्गत काव्य सौन्दर्य सम्बंधी सभी प्रश्नों पर मौलिक रूप से विचार किया गया है। भारतीय इतिहास में सौन्दर्य का विशेष महत्व रहा है, सौन्दर्य चारूत्व, रमणीयता, शोभा, क्रांति, चमत्कार वैचित्रय आदि नामो से जाना जाता है, इस प्रकार 'सुन्दर' की अवधारणा भारतीय सहित्य में बहुत पहले से चली आ रही है। भारतीय संस्कृति का मूल आदर्श ही सत्य, शिंव, सुन्दरम् पर टिका हुआ है, (सौन्दर्य (सुन्दर शब्द का अर्थ पाश्चात के एस्थेटिक्स "शब्द के निकट है किन्तु पूर्णतया उसके समान अर्थ मे उसका प्रयोग भारतीय साहित्य में नही मिलता फिर भी सौन्दर्यशास्त्र को ललित शास्त्र अथवा नन्दन शास्त्र कहकर एस्थेटिक्स के पर्यायवाची अर्थ मे लेते है, सौन्दर्य ग्रहण करने के लिए तीन पक्ष है कलाकार, कलाकृति और कला रसिक। भारतीय दर्शन में सौन्दर्य दो प्रकार का है– (1) बाह्य जिससे हमारी इन्द्रियों को सुख मिलता है (2) आन्तरिक– जो ऊपरी सतह पर क्षण कर के सौन्दर्य से मोहित नही होता किन्तु उसका अनुभव आत्मा से होता है। इसी आत्मिक सौन्दर्य से परम सत्य की प्राप्ति होती है।

यह सर्वमान्य सत्य है कि सुन्दरता में आकर्षण व सम्मोहन होता हैं, जिससे सुख की प्राप्ति होती है। परन्तु पाश्चात्य देशों व भारत में सुन्दरता विषयक मान्यताओं में भिन्नता होती है, और यह रूचि–भेद प्रत्येक देश की परम्परागत संस्कृति की देन होता है। कांट ने भी इसी सम्बंध मे अपना समाज जनित संस्कारों के अनुरूप ही ग्राहय होती है। सभी दार्शनिक, मार्मिक और सौन्दर्यशास्त्र सुन्दर को कभी सुन्दर वस्तु के लिये तो कभी सुन्दर विश्लेषण के अर्थ में ग्रहण करते हैं ग्रीक युग में बाह्य सुन्दरता को ही अधिक महत्व दिया गया और सुन्दर शब्द के लिए अंग्रेजी शब्द Beauty प्रचालित रहा, किन्तु मध्य युग मे तथा आधुनिक युग मे सौन्दर्य शब्द का प्रचार हुआ और उसके अर्थ भी सुन्दर से भिन्न हुए। सौन्दर्यशास्त्र का मुल विषय सौन्दर्य के स्वरूप की व्याख्या है।

सौन्दर्य के सम्बंध में भारतीय और पाश्चात दार्शिनिकों के मत अलग–अलग है। वैसे तो भारतीय मत में जिस सत्य, शिवं, सुन्दरम् को स्वीकार किया गया है, उसे प्लेटों में उसी रूप में स्वीकार किया है। उसके अनुसार वस्तु में सुन्दरता या असुन्दरता का कोई स्थान नहीं होता। महत्वपुर्ण बात है उसका जीवनमय होना। सौन्दर्य के आधार पर कोई वस्तु प्रिय अथवा घृणित नहीं हो सकती वरन् उसकी जीवनदायिनी कला हमें अपनी ओर आकृष्ट करती है कल्पना के सुन्दर पंखो पर बैठाकर अनिर्वचनीय सुख और रसानुभूति करती हैं।

हर्वट रीड के अनुसार "Beauty is the unity of the formal relation among upper sense of perception"

सेंट थामस के अनुसार "एन्द्रिय माध्यम से तर्क की अभिव्यक्ति ही सौन्दर्य है।

वामगार्टन के मतानुसार "एस्थेटिक्स ऐन्द्रिय बोध का विज्ञान है, जो संवेदनाओ का विश्लेषण करने की क्षमता रखता हो"

इन परिभाषाओ से यह स्पष्ट होता है कि– सैन्दर्यशास्त्र कला का सौदान्तिक रूप से विवेचना करता है और कला से सम्बन्धित मानव व्यवहार मे काव्यशास्त्र करता है।

सौन्दर्यशास्त्र आज अध्ययन के स्वतंत्र विषय के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है, और अन्य विषयों जैसे दर्शन, मनोविज्ञान आदि से कुछ समानता रखते हुए भी उनसे भिन्न है। डॉ0 नागेन्द्र के अनुसार "सौन्दर्यशास्त्र और काव्य शास्त्र में पृथकता है क्योकि काव्य शास्त्र केवल काव्य तक ही सीमित है और काव्य सौन्दर्य का ही विवेचन करता है। जब कि सौन्दर्यशास्त्र, काव्य, स्थापत्य, मुर्ति चित्र और संगीत कला सभी कलाओ के सैन्दर्य का तत्व विवेचना करता है। रविन्द्रनाथ टैगोर ने निष्प्रयोजन आनन्द को सौन्दर्य का लक्षण माना है। सौन्दर्य का सम्बंध किसी सत्य, असत्य अथवा ज्ञान से नही होता वरन् वह स्वानुभव से होता है। वैसे सौन्दर्य के साथ आनन्द का घनिष्ट सम्बंध है किन्तु इस के अन्दर इच्छा की तृप्ति न होकर प्राप्ति की तृप्ति होती है।

निष्कर्ष

मूर्तिकला एवं वास्तु कला चित्र कला में जो भी कलाकारी की जाती है उक्त कला को देखकर अपने आप ही सुनकर और महसूस कर मानव के अर्न्तमन में सौन्दर्य उत्पन्न होता है व सहज ही रंग भरना व आकार देने लगता है। उसी तरह जब मधुर संगीत मानव के कानों तक पहुँचता है वह सहज ही थिरकने लगता है एवं अपनी आत्मानुभूति द्वारा स्वर, लय व ताल कायम करने लगता है। यहाँ तक की पशु पक्षियों की चहचाहट में भी उसने संगीत को अनुभव किया व उसको स्वरबध्य, लयबध्य व तालबध्य किया बारिश की बूदों में झरनों की कलकल में बच्चों के रूदन में मंदिर में बजने वाले घंटों व घडियालों से निकलने वाली ध्वनियों को आत्मानुभव द्वारा ही महसूस करके उसे संगीत बध्य किया जा सकता है। वैसे तो चित्रकला हो या मूर्ति कला, वास्तु कला चाहे क्यों न संगीत कला ही हो ये सभी किसी भाषा के मोहताज नहीं होते हैं। उसे सिर्फ आत्मानुभव द्वारा ही महसूस किया जा सकता है। जैसे हीरे की परख जौहरी ही कर सकता है वैसे सभी ललित कलाओं में सौन्दर्य की अनुभूति का अनुभव आत्मानुभूति द्वारा ही किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सौन्दर्य, रस एवं संगीत दृ प्रो0 स्वतंत्र शर्मा*
2. *संगीत विशारद– बसंत*
3. *निबन्ध संगीत– डॉ लक्ष्मी नरायण गर्ग*
4. *गुगल से सामग्री प्राप्त–*
5. *भारतीय संगीतः वैज्ञानिक विश्लेषण– प्रो0 स्वंत्रत शर्मा*
6. *भारतीय सभ्यता : संस्कृति एवं संगीत – डॉ0 अंजली मित्तल*
7. *भारतीय संगीत के नर आयाम – प0 विजय शंकर मिश्र*